શ્રી યશોવિજયજી
જૈન ગ્રંથમાળા
દાદાસાહેબ, ભાવનગર.
ફોન : ૦૨૭૮-૨૪૨૫૩૨૨
૩૦૦૪૮૪૬

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

1234 3290

☞ अधिक-मास-निर्णय.

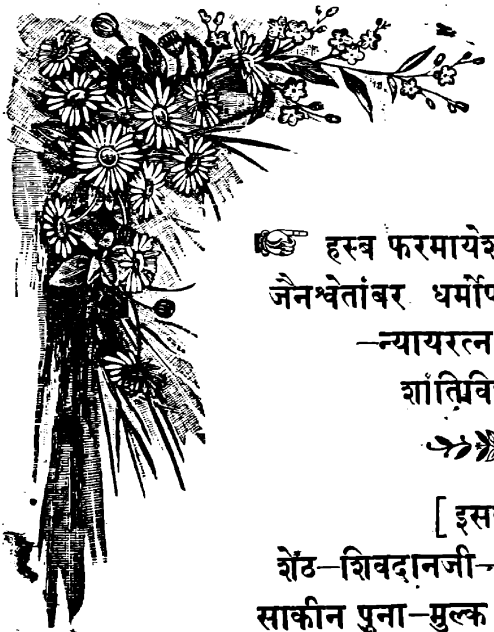

☞ हस्त फरमायेश—जनाब—फेजमाब
जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा—विद्यासागर
—न्यायरत्न महाराज—
शांतिविजयजी,

[इसकों]

शेंठ—शिवदानजी—प्रेमाजी—गोटीवाले,
साकीन पुना—मुल्क दखनने छपवाया.

मुद्रक—केशव रावजी गोंधळेकर, 'जगद्धितेच्छु'प्रेस,
४३२, शनवार पेठ, पुणें.

संवत १९७४] [सन १९१७

—मुफ्त—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

[दिबाचा.]

किताब अधिकमासानिर्णय तयार करनेका सबब यह है कि—इन दिनोमें इसबातकी चर्चा जैतश्वेतांबरसंघमें जोरसे चलरही है. इस किताबमें जो जो दलिले लिखीगइहै, बाचनेवाले अगर खयालसे पढेगे. खुद अधिकमाहिनेके बारेमे जवाब दैनेके काबिल होजायगे. अधिकमास कौनसा जानना. पहला या दुसरा? इसका निर्णयभी इसमें दियाहै. जहां सात सवालोके जवाब दियेहै, उसजगह देखलो! और आपने दिलकी तसल्ली करलो. अधिकमाहिना चातुर्मासिक वार्षिक और कल्याणिक वगेरा पर्वकृत्यमें गिनतीमें नही लेना, प्रमाणकेसाथ सिद्ध करादियाहै. खरतरगछ अंचलगछ और लोंकागछवालेभी जब दो आषाड आतेहै, पहला आषाड चातुर्मासिकपर्व कृत्यमें गिनते नही, और जब दो पौष आतेहै, तब एक पौषको कल्याणिक पर्वकृत्यमें गिनतीमें नही लेते, इस किताबकों अवलसे अखीरतक पढलिजिये सबहाल बखूबी मालुम हो जायगा. चर्चाके ग्रंथ या लेख पढनेसे एकतरहकी चतराइ हासिल होतीहै. इस किताबका लिखान तयार करनेमें तपगछके यतिजी श्रीयुत चारित्रविजयजीनें मुजे अछी मदद दिई, और शेठ शिवदानजी प्रेमाजीगोटीवालोने अपने खर्चसे छपवाकर जाहिर किइ. मैं उमेद करताहुं इस किताबके पढनेसे आम जैनश्वेतांबर संघकों अधिकमासके निर्णयमें बहुत कुछ माहिती मीलेगी,

(ग्रंथकर्त्ता,)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

[अधिक मास निर्णय.]

(जैन श्वेतांबर धर्मोपदेष्टा विद्यासागर-न्यायरत्न महाराज शांतिविजयजी तर्फसे.)

दोहा.]

सुरतसे कीरत बडी । विना पंख उडजाय,
सुरत तो जाती रहे । कीरत कबु न जाय,

आम जैन श्वेतांबर समाजको मालुम हो. इनदिनोमें अधिक महिनेके बारेमें जो जो चर्चा चलरही है. उसका निर्णय इस किताबमे किया जायगा. आपलोग देखिये! और सचका इम्तिहानाकिजिये! दरअसल!! इससाल अन्यमजहबके पंचांगकी रुहसे जो दो भादवे महिने आयेथे बंबइसे इसके बारेमे अवल चर्चा उठी. बजयरीये छापेके सवाल जवाब शुरु हुवे. कइ हेंडबील और किताबे मेरेपास पहुंची. मेरा चौमासा इससाल शहर पुनेमे हुवाथा. कइ जैन मुनिजनोके और श्रावकोके खत मेरेपास आये—कि आप इसका जवाब देवे. जैन शास्त्रोका फरमानहैकि अधिक महिना कालपुरुषकी चूलां यानी चोटी-समान है. आदमीके शरीरके मापमें चोटीका माप नही गिना-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जाता इसीतरह अधिक महिना अछे काममें गिनतीमें नही लिया जाता. अधिक महिनेमे विवाह सादी वगेरा काम नही किये जाते. दीक्षा प्रतिष्ठा वगेरा धार्मिक कामभी अधिक महिनेमें नही करते. फिर पर्यूषणपर्व जैसे उमदा पर्व अधिक महिनेमें कैसे किये जाय. इसपर गौर किजिये, बस ! इसी बातपर यह किताब वनाइ गइहै.

२—बंबइसे खरतर गछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजीकी वनाइ हुइ किताव लघुपर्यूषणानिर्णय और अंचल गछके यतिजी श्रीयुत न्यायसागरजी महिमासागरजीकी सहीसे छपे हुवे हेंडवील जब गये भाद्रपद महिनेमें वजरीये डाकके मेरेपास पहुंचेथे मेने उनलेखोपर एक किताव पर्यूषणपर्वनिर्णय वनाइथी, और गतपर्यूषणके दिनोमें छपवाकर जाहिर किइथी आपलोगोने पढीहोगी. जितनी छपीथी हिंदके शहर व शहरोमें जहां जहां जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आबादी है भेजी गइथी, उस वख्त खरतर गछके मुनिजनोंकी अंचलगछ लोंकागछके यतिजनोकी और श्रावकोकी और तपगछके श्रावकोकी कइचीठियां मुल्क गुजरात, मारवाड, सिंध, पंजाब, राजपुताना, वंगाल, मध्यप्रदेश, वराड, खानदेस, मालवा, और दखनसे व जरीये डाकके मेरेपास आइथी, और उनमे अभिप्राय दियाथा कि किताव पर्यूषणपर्व निर्णय उमदा वनीहै दलिले मजबूत और कंठस्थ रखनेकाविल है. कइ महाशयोने लिखाथा पुस्तक पर्यूषणपर्व निर्णय आपकी वनाइ हुइ मिली. अवलसे अखीरतक देखकर अजहद खुशी हासिल हुइ. क्यौं न हो. जवावहो तो एसाहो कइ महाशयोने ते हरीर कियाथा, आपके लेख हमेशां निर्पक्ष होतेहै. पर्यूषणपर्वके

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बारेमें आपका लेख जैनपत्रमेंभी पढाथा, बेशक! आदमीकी उचाइके मापमें चोटीका माप नहीगिना जाता, वगेरा अभिप्राय आयेथे.

३—अधिकमहिना जिसवर्समे आवे उसवर्सका नाम अभिवर्द्धितसंवत्सर कहतेहै, और वो तेरहमहिनोंका होताहै, यह एक जगजाहिर वातहै, खरतरगछ अंचलगछ लोंकागछवालेभी जव कभी दो आषाड महिने आतेहै, पहले आषाडको चातुर्मासिक व्रत नियमकी अपेक्षा गिनतीमें नहीलेते, जव कभी दो पौषमहिने आतेहै पौषवदी दसमीका तीर्थंकर पार्श्वनाथमहाराजका जन्मकल्याणिक एक पौषमें करतेहै, एक पर्यूषणके बारेमें कल्पसूत्रके आधारसे (५०) दिनका पक्ष लेकर अधिक महिना गिनतीमे लेनेकी बात अगाडी लातेहै, मगर समवायांगसूत्रके आधारसे जो संवत्सरीके बाद (७०) दिन रखनेका पाठहै उसको खयालमें नहीलाते, और लाजवाब होतेहै, बस! वात समजनेकी इतनीहीथी मगर अधिक महिना वार्षिकपर्वमे गिनतीमे लेनेवालोने रजका गज बनादिया. और बातको बढादिइ.

४—खतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपनी लघुपर्यूषणानिर्णय किताबमे जिनजिन शास्त्रोंके नाम लिखकर अधिक महिना गिनतीमे लेनेका कहतेहै, उनमे सिर्फ! इतनाही लिखाहैकि अभिवर्द्धित संवत्सर तेरह महिनोका होताहै, जैनशास्त्रके फरमानसे चौमासेके चारमहिनोंमे अधिक महिना कभी आता नहीं. इससाल मुताविक जैनशास्त्रके दो भाद्रपदमहिने आये नहींथे पाठवतलातेहै, जैनशास्त्रोका और वैरताव करतेहै, अन्यमतके पंचांगपर इसका क्या सबबहै! कोइ जवाब देवे,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

में बडाताज्जुब करताहु कि—वात कुछभी नहीथी मगर बढाकर कितनी लंबी करादिइ ? इस किताबके पढनेसे अकल मंदलोग खुद समज लेयगेंकि—अधिक महिना बेशक ! कालपुरुषकी चोटी समानहै, इसकों चातुर्मासिक वार्षिक और कल्याणिक पर्वके व्रत नियममे गिनना नही, यह बात बहुत ठिकहै.

५—खरतरगछके मुनि श्रीमणिसागरजी अपनी बनाइहुइ किताब लघुपर्यूषण निर्णयमे लिखतेहै. चंद्रप्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्ति जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति भगवती अनुयोगद्वार निशीथचूर्णि वृहत्कल्पचूर्णि प्रवचन सारोद्वार ज्योतिष्करंडकवगेरा जैनशास्त्रोमे गिनतीमे लियाहै (जवाब) अभिवर्द्धित संवत्सर तेरहमहिनोका होताहै. इतनाहि इनमें बयानहै. और यहबात जगजाहिरहै. मगर चातुर्मासिक वार्षिक और कल्याणिक वगेरा पर्वके व्रत नियमकी अपेक्षा गिनतीमे लेना एसा बयान नहीहै. अगर एसा बयानहो तो कोइ पाठ बतलावे, बात चलतीहै दो भादवेकी और चलेजातेहै अभिवर्द्धित संवत्सरमें, जैनज्योतिषके फरमानसे चौमासेमे अधिक महिना आतानही, इससालजैनज्योतिषकी रुहसे दो भादवे महिने नहीथे, बात करना जैनशास्त्रकी और चलना अन्यमतके ज्योतिषपर यह कौन इन्साफहुवा ? और फिर इसबातकाभी जवाब देना चाहियेकि—जब दो आषाढ आतहै, आपलोग पहले आषाढमें चौमासा क्यौंनही बेठाते ? अगर कहाजाय पहेला आषाढ गृष्मरुतुमे चलागया तो जवाबमें मालुमहो, उधर पांचमहिनेका चौमासा होगया. और चौमासा होना चाहिये चारमहिनेका इसका क्याजवाब देतेहो? गिनतीमे पांच महिना मानना, और मुंहसे कहना चौमासा यह क्या बात हुइ ? बात यह हुइकि एक आषाढको चातु-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मासिककृत्यमें गिनते नही लेते और पक्ष पकडतेहै, अगर इसीबातकों इन्साफसे समज लिइजाय तो सब शक रफा होजाय.

६—अगर अधिक महिना गिनतीमे लेनेका पक्षकरते होतो बतलाइये! जबकभी अन्यमतके पंचांगकी रुहसे दो चैतमहिने आवे तब क्या! खरतर गछवाले अंचलगछवाले और लोंकागछवाले नवपदजीका तप दोदफे करेगें, कभी नही, अन्यमतके पंचांगकी रुहसे जबकभी दो कातिक महिने आयगे, तब क्या! दिवाली पर्व आपलोग दोदफेकरेगें? असलमे चाहेजिसको पुछलो! या धर्मशास्त्र देखलो! कोईपर्व दोदफे नही किया जाता. एकहीदफे कियाजाताहै, चाहे पहलेमे करो या दुसरेमे मगर एकमहिना तो वार्षिक वगेरापर्वकी अपेक्षा छोडनाही पडेगा, इसमे कोइ शकनही. फिर तपगछवाले और क्या कहतेहै, यही कहतेहै, वार्षिक पर्वके व्रतनियमकी अपेक्षा अधिक महिना गिनतीमें मतलो, खरतर गछवाले अंचलगछ और लोंकागछवालेभी चातुर्मासिक और कल्याणिक पर्वके व्रतनियमकी अपेक्षा पहले आषाडको गिनतीमें नहीलेते, इस बातमें तपगछवालोके मंतव्यपर अमल करतेहै. वार्षिक कृत्यमे (५०) दिनकी गिनतीपर अमल करतेहै, मगर बाद संवत्सरीके (७०) दिनरखना एसाजो समवायांग सूत्रका पाठहै, उसपर अमल नही कर सकते.

७—इससाल पर्यूषण और अधिक महिनेके बारेमे जैनश्वेतांबरोकी तर्फसे जितनेलेख छपे उनमें किसीमेभी मेरेनामपर आक्षेप नहीथा. मगर तपगछ उपर आक्षेप आताथा, इस, लिये जवाबदेना मुनासिबहुवा, में एक तपगछका जैन-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मुनिहुं. ताकात होते हुवेभी जवाब नही देना, एकतरहकी कमजोरी अपनेसीर आतीहै, इसलियेभी जवाबदेना बहेतर समजागया, अगरकोइ जैन मुनि एसाखयालकरेकि जवाब देनेसे आपसमें अनबनाव होगा, तो यह खयाल महेज गलतहै, इन्साफसे अछेशब्दोमे जवाब देना किसीपर अंगतटीका नही करना, इससे कभी अनबनाव नही होसकता, अपनेपर कोइ आक्षेपकरे और उसका जवाब नही देना बडी भूल है. अपने गछके श्रावकोको इसबातका शकपैदा होगाकि सायत! अपना मानना गलत होगा, इसलिये जैनशास्त्रके पढेहुवे जैनमुनिकों लाजिमहै. जवाबदेना, दुसरे गछवाले बजरीये लेखके तपगछके मंतव्यपर आक्षेपकरे और उसका माकुल जवाब न दियाजाय यह मुनासिब नही.

८—आजकल अधिक महिनेकी चालुचर्चामें जैनसमाजमेसे जो जो महाशय लेख लिखतेहै; उनमें बहुत करके एक दुसरोपर अंगतटीका होतीहै, ऐसे लेख बाचनेवालेभी पसंद नही करते, इसलिये जिसबातपर चर्चा चलीहो उसीपर कायम रहकर अछेशब्दोंमें लेख लिखना चाहिये. मेने जो पहले पर्यूषण निर्णय किताब बनाइथी, उसको जिनोने पढीहोगी, उनको मालुम होगाकि उसमे भाषा कैसी रखीगइहै? और इस अधिक मास निर्णय किताबमेंभी देखलो! इबारत कैसी लिखीहै, में अपशब्द लिखना पसंद नही करता. प्रतिपक्षीके लेखका माकुलजवाब देना पसंद करताहुं.

९—मेरी बनाइ हुइ किताब पर्यूषणपर्व—निर्णय जवगत भाद्रपद महिनेमे छापकर जाहिर हुइथी. खरतर गछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजीकोंभी भेजी गइथी, उसपर उनोने कुछ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जवाव नही लिखा, सिर्फ! विज्ञापन नंवर पहलेमें इतना लिखाकि वर्तमानपर्युषणकी चर्चा संवंधी सुरतसे अमरेलीसे कपडवंजसे जो जो लेख छपकर आयेहै, तथा पुनेसे न्याय-रत्नजी शांतिविजयजी तर्फसे जैनपत्र तारिख (२६) अगष्ट-कालेख वा पर्यूषणपर्वनिर्णय नामक पुस्तक दुसरे भाद्रपदमें पर्यूषणपर्व करनेका ठहरानेकेलिये छपाहै, वे सव शास्त्रकारोके अभिप्रायसे विरुद्ध और जिनाज्ञा वहारहै.

(जवाव) जैसे मेने पूर्वपक्ष लिखकर उत्तरपक्षमे जवाव दियाथा खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजीने मेरेलेखपर इसतरह जवाव क्यौं नही दिया? मेरेलेखमें कौनसीवात शास्त्र-विरुद्ध और जिनाज्ञावाहिरथी दाखले दलिलोसें वतलाया क्यौंनही,? जैनशास्त्रोके पाठसे माकुलजवावदेनाथा. विना-जवावदिये शास्त्रविरुद्ध कहना मुनासिव नही.

१०—आगे खरतरगछके मुनिश्रीयुत मणिसागरजी अपने विज्ञापन नंवर पहलेमें लिखतेहै, वर्तमानिक विवाद कुसंपका मुख्य कारण विनय विजयजीकृत सुवोधिका वृत्तिके खंडन-मंडनकों प्रतिवर्स प्रायः सवजगह पर्यूषणके व्याख्यानमें तप-गछके मुनि वाचतेहै, उसीको समजना चाहिये.

(जवाव.) क्या! खरतरगछके मुनि प्रतिवर्स पर्यूषणके दिनोमें तिर्थंकर महावीर स्वामीके छह कल्याणिक नही वाचतेहै? अगर वांचतेहै तो क्या! यहवात वर्तमान विवादका कारण नही समजना? खरतरगछके आचार्य श्रीयुत लक्ष्मी-वल्लभजीकृत कल्पद्रुमकलिका टीका और उपाध्याय श्रीयुत समयसुंदरजीकृत कल्पलता टीका देखो, उनमे छह कल्याणि-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कंकी बातहै या नही? और इस अधिकारको खरतरगछके मुनि बाचतेहै या नही? अगर बाचतेहै, तो इसबातको वर्तमान विवादका कारण समजना या नही? खरतर गछके मुनिश्रीयुत मणिसागरजी इस बातको सोचे, नवांगसूत्रकी टीका बनानेवाले श्रीमान् अभयदेव सूरिजीको खरतर गछवाले अपने गछमें हुवे बतलातेहै. उनकी बनाइहुइ पंचाशक सूत्रकी टीका देखो. उसमे उनोने तीर्थंकर महावीरस्वामीके पांचकल्याणिक लिखेहै, छह नही लिखे. अगर कहा जाय कल्पसूत्रके पाठमें छह कल्याणिक लिखेहै, तो जवाबमें मालुमहो, कल्पसूत्रकी पुरानी टीका जो खरतर गछके निकलनेसे पहिलेकी बनीहुईहो, उसमें गर्भापहारको कल्याणिक लिखाहोतो कोइमहाशय पाठ बतलावे. मूलपाठका अर्थ जो प्राचीन टीकाकारने लिखाहो, वो मंजुर करना चाहिये, अगर कल्पसूत्रके मूलपाठमें तीर्थंकर महावीरस्वामीके गर्भापहारको छठा कल्याणिक लिखाहोता तो नवांगसूत्रकी टीका बनानेवाले श्रीमान् अभयदेवसूरीजी पंचाशकसूत्रकी टीकामे पांचकल्याणिक क्यौं बयान करते? संभवतहोताहै, जब उनोने पांचही कल्याणिक बयानकिये तो जमाने उनके पांच कल्याणिककी मान्यता मंजुरथी छह कल्याणिककी बात उनके बाद शुरुहुइहै.

११—फिर खरतर गछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर पहिलेमे बयान करतेहै, विनयविजयजीनें सुबोधिकामे शास्त्रकारमहाराजोके अभिप्राय विरुद्ध होकर बहुतबातें जिनाज्ञाबाहिर लिखीहै, और कुयुक्तियोंकों आगेकरके तीर्थंकर गणधर पूर्वधरादि पूर्वाचार्योंकी आशातना किइहै.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

(जवाब.) तपगछके उपाध्याय श्री विनयविजयजीने न तीर्थंकर गणधिरोकी न पूर्वाचार्योंकी आशातना किइहै. उनोने आपके माने हुवे छह कल्याणिकके पक्षको ठीक नही कहां, यह वात चाहे आपकों नागवार गुजरी होगी, इसी लिये सायत आप कहते होगें कि उनका कहना शास्त्र विरुद्ध है. मगर आप यह खूब यादरखिये! उनका कहना मुताबिक जैन शास्त्रके सच है. पंचाशकसूत्रके मूलपाठ और टीकाका पाठभी देखलिजिये, और अपने दिलकी खातिर जमा कर-लिजिये. मेने पर्यूषणपर्व निर्णय कितावमें मजकुर पाठ छपवा दियाहै, और वो किताब बंवइसे आपने बजरीये चीठीके मंग-वाइथी, और मेने पुनेसे आपको भेजीथी. आपको मिली होगी, अगर आपकों अपने खरतर गछके आचार्य श्रीमान् अभयदेवसूरिजीका लेख मंजुर न होतो बजरीये छापेके जाहिर किजियेकि—मुजेवो लेख मंजुर नही. जबतक यहबात आपकी तर्फसे जाहिर नही होगी, तबतक तपगछके उपाध्यायश्री विनयविजयजीकृत कल्पसूत्रकी टीकापर आक्षेप करना गलतहै उनकी कौनसी बातें शास्त्रविरुद्धथी और जिनाज्ञा बाहिरथी लिखाक्यौं नही? कोरी बाते बनाना फिजहुलहै.

१२—आगे खरतर गछके मुनि श्रीयुत माणिसागरजी अपने विज्ञापन नंवर पहलेमे तेहरीरकरतेहै, दृष्टिरागी पक्षपाती गड-रीह प्रवाही जन श्रद्धापूर्वक बरताव करे तो संसारवृद्धि और दुर्लभ वोधीकी प्राप्तिका कारण होना संभव है,

(जवाब.) जब आपके खरतर गछके आचार्य श्रीमान् अभय देवसूरिजी तीर्थंकर महावीर स्वामीके पांचकल्याणिक फरमातेहै, फिर आप किसप्रमाणसे छह कल्याणिक फरमातेहै

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अब पक्षपाती कौन हुवे. दृष्टिरागी और गडरीहप्रवाहीजन किसको कहना? इसकी फिरतलाशकिजिये! सचबातपर अगर कोइ शख्श श्रद्धापूर्वक बरताव करे तो उनको संसारवृद्धि कभी नही होती, न उनको दुर्लभबोधीपना होसकता.

१३—फिर खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर पहलेमें इसमजमुनको पेशकरते है, विनयविजयजीकृत सुबोधिकाकी उत्सूत्रप्ररुपणाकी बातोंको व्याख्यानमे बाचना बंद कर देना.

(जवाब.) खरतरगछके आचार्य उपाध्यायकी बनाइहुइ कल्पसूत्रकी टीकामें छह कल्याणिककी बातें आवे वो व्याख्यानमें बाचना बंद कर देना चाहिये. क्योंकि आपके खरतरगछके आचार्य श्रीमान् अभयदेवसूरिजी पंचाशकसूत्रकी टीकामें तीर्थंकर महावीर स्वामीके पांचकल्याणिक फरमातेहै.

१४—आगे खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर पहलेमें लिखतेहै, मिथ्यात्वके सार्थवाही धर्मसागरके कदाग्रही लेखोकी तरह इनकेभी अनुचित लेख जलशरण करदेना चाहिये.

(जवाब) जलशरण वे लेखाकिये जातेहै जो धर्मशास्त्रसे विरुद्ध हो. तपगछके उपाध्याय श्रीविनयविजयजीके लेख जैन शास्त्रसे विरुद्ध और अनुचित कोइ साबीत करे, विना साबीत किये आप उनके लेख जलशरण करदेना कैसे कहसकतेहो? और आपके कहनेसे क्या होसकता है. आप चाहे जितना कहते रहे. दुनियामें कहलावत है कि साचको आंचनही. अब आपने जो तपगछके उपाध्याय श्रीयुत धर्म सागरजीके बारेमे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat　www.umaragyanbhandar.com

लिखाहै, उसका जवाब सुनिये मिथ्यात्वके सार्थवाह कौनहै और कदाग्रही लेख किसकेहै ? इसकी तलाश फिर किजिये, तपगछके उपाध्याय श्री धर्मसागरजी सम्यक्तके सचे सार्थ वाहथे, उनोने आपके माने हुवे छहकल्याणिककी बात गल तफरमाइथी, यह बात सायत! आपको नापसंद हुइ होगी, इसलिये आप उनको एसा कहते होगे. मगर एसी बातोसे उनका कुछ नुकशान नही होसकता, तीर्थंकर देवोकोभी कइ-लोग इंद्रजालीक कहतेथें सोचो! इससे उनका क्या नुकशान था? अगर आपकी मरजी हो तो ऊनके लेखोको लिखकर निचे उसका जवाब बजरीये छापेके जाहिर किजिये! वाचनेवाले खुद सचका इम्तिहान करलेयगे, और इसीतरह तपगछके उपाध्याय श्रीविनयविजयजीके लेख लिखकर नीचे टीका किजिये ! में उसपर माकुल जवाब दुंगा, और यहबात आप कभी अपने खयालशरीफमें न लाइयेकि—शांतिविजयजी जवाब न देयगें, शांतिविजयजी हरवख्त जवाब देतेहै, और देयगें, चाहे कभी देरी हो जाय तो क्या हुवा? मगर जवाब जरुर देयगें.

१५—फिर खरतर गछके मुनि श्रीमाणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर दुसरेमें लिखतेहै, नये नये बखेडे क्यौं खडे करते हो? कपटकी ठगाइ छोडो, और न्यायसे सामने आओ.

(जवाब) न्यायसे सामने आनेकों दोनोंतर्फसे प्रतिज्ञापत्र छपगये है. सभा करके शास्त्रार्थ करलो, कौन मना करतेहै? नये नये बखेडे कौन खडे करतेहै? खरतर गछके मुनि श्रीयुत माणिसागरजीने लिखकर बतलाया क्यौं नही,? और कपटकी ठगाइ कौनसीथी? बतलाना चाहियेथा.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१६—आगे खरतरगछके मुनि श्रीयुत माणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर दुसरेमे बयान करतेहै. हम शास्त्रप्रमाण मुजब आषाड चौमासीसे (५०) मे दिन अर्थात् सरलदिन गणनासे प्रथम भाद्रपदमें पर्यूषण करना बतलाते है.

(जवाब) में बाद संवत्सरीके (७०) दिन बाकीरखना समवायांगसूत्रके पाठसे बतलाताहुं. इसको रद करनेका कोइ पाठ आपके पास मौजूदहो तो पेंशकरे, और इसबातका साफ-तौरसे जवाब देवोकि समवायांगसूत्रके पाठको सचा मानना—या—गलत? आपने इससाल अन्य मतके ज्योतिषपर चलकर दो भादवेमाहिने माने और प्रथम भाद्रपद माहिनेमें संवत्सरी किइ. और पीछे (१००) दिन बाकी रखे, यह बात समवायांगसूत्रके पाठसे विरुद्धहै. आपलोग (५०) दिनकी गिनतीके वख्त जैनशास्त्रपर जातेहो, और अधिकमासकी गिनतीके वख्त अन्य मतके ज्योतिषपर जातेहो. इसका क्या सबबहै. अगर जैनशास्त्रपर जाना मंजूरहै तो वर्षारुतुमें अधिकमाहिना आता नही. अधिकमाहिने जबजब आतेहै, तब मुताबिक जैनज्योतिषके पौष और आषाड आतेहै. चौमासी कृत्यमें आपलोगभी अधिकमाहिना गिनतीमें नही लेते, तीर्थंकर पार्श्वनाथमहाराजका जन्म कल्याणिक पौषवदी दशमीका एक पौषमें करते हो. उसवख्त आपकी सरल दिन गणना कहां चली जातीहै. अधिकमाहिना गिनतीमें लेनेका पक्ष करतेहो. और चौमासी कृत्यमें आषाड और कल्याणिक कृत्यमें एक पौष छोडते जातेहो. यह क्या बात हुइ? परउपदेशमें कुशल बनना, इससे उसपर अमल करना अछाहै.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

१७—फिर खरतर गछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर दुसरेमे तेहरीर करतेहै. दुसरे भाद्रपदमें (८०) दिन होनेसे शास्त्रविरुद्धहै.

(जवाब,) पहले भाद्रपदमे पर्यूषण करनेसे बादसंवत्सरीके (१००) दिन रह जायगें यह शास्त्रविरुद्धहै, क्यौंकि समवायांगसूत्रके मूलपाठमे बादसंवत्सरीके (७०) दिन बाकी रखना कहां. इसकेलिये आपकेपास क्या जवाब है? दरअसल! वार्षिक कृत्यमें अधिक महिना गिनतीमें नही लेनेसे दोनोतर्फ शास्त्र विरुद्ध नही होता. तपगछवालोने वार्षिकपत्र कृत्यमें पहले अधिक महिना गिनतीमें नही लिया. आपलोगोनें संवत्सरीकेबाद एक महिना गिनतीमें नही लिया, यही बात समजनेकी है, इतनेपरभी आपको अधिक महिना गिनतीमें लेनेका पक्षहै तो बतलाइये! आपने अपनाचौमासा एक महिने पहले क्यौं नही खतम किया? क्यौंकि (७०) दिनकी सरलगणना तो एक महिने पहले हो जातीथी. देखिये! इसबात तर्फ आपने खयाल नही किया. दुसरी बात यहथीकि नवपदजीका तपभी एक महिने पहले करलेना था. कहिये! इसका आपक्या जवाब देतेहै?

१८—आगे खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर दुसरेमे इसदलिलकों पेंश करतेहै, हमारी तर्फसे लघुपर्यूषण निर्णय प्रगटहो चुकाहै. उसमे दो आषाड होवे तब दोनों मान्य, मगर चौमासी दुसरे आषाडमें करना.

(जवाब)—चौमासी दुसरे आषाडमे करना कहतेहो तो दोनों आषाड मान्य कहां हुवे? अगर दोनों मान्य होते तो चौमासा पहले आषाडमें बेठाते, इधरउदरसे तपगछवालोकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मानीहुइबातपर आना. और फिर मुखसे कहनादोंनों आषाड मान्य है. यह क्या बात हुइ. इसीको अगर अछीतरहसमजलिइजाय तो फिर शकही किसबातका रहे. अपने पक्षकों जहां पुष्टि मिले वहां उसबातको मानना. और जहां पुष्टि न मीले वहां नही मानना यह कौन इन्साफ हुवा? बल्कि! सचपुछोतो एकतरहका पक्ष हुवा, जब सभा होगी उसमे विद्वान्लोग बेठेगें यह पक्ष कैसे ठहरसकेगा? जैसे खरतरछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजीकी तर्फसे लघुपर्यूषण निर्णय जाहिर हो चुका है, वैसे मेरी तर्फसे पर्यूषणपर्व निर्णय जाहिर हो चुकाहै, दोनोंकों मीलाकरदेखालिजिये! और सचका इम्तिहान करलिजिये. सबुतहुवा आपभी चातुर्मासिकव्रत नियमकी अपेक्षा अधिक महिना गिनतीमें नही लेते, तपगछवाले फिर और क्या कहतेहै? अगर कहाजाय पहला आषाड ध्रूपकालके चौमासेमें चलागया तो जवाबमें मालुम हो उधर पांच माहिने होगये, फिर बात क्या हुइ? बात यही हुइकि—दोनो आषाडमेसे एक आषाड चौमासिक व्रतनियमकी अपेक्षा आपनेभी गिनातिमें नही लिया.

१९—दुसरी दालिल तिथिके बारेमेभी देताहुं. सुनिये! हरेक पखवाडा पनराहरोजका मानाजाताहै, मगर कइदफे तिथिकी कमीबेसी होनेसे कभी चौदहदिनका या कभी सोलहदिनका पखवाडाभी होताहै लौकिकपंचांगकी अपेक्षा कभी तेरहदिनकाभी होताहै. बतलाइयें आप पाक्षिक प्रतिक्रमण पनरांहमे रोजकरेंगे सोलहमे रोज करेंगे चौदहमे या तेरहमें रोज करेंगे? इसका जवाब दिजिये! आपकी सरलदिन गणना उसवख्त कहां चली जायगी? यातो कमी बेसी दिनकी मान्य-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ताको छोडिये, या पुरेपनरांहमेरौज पाक्षिक प्रतिक्रमण किजिये इसअपेक्षा जैसे कमीवेसी तिथिको गिनतीमेसे छोडदेतेहो, वैसे अधिक महिनाभी चातुर्मासिक वार्षिक और कल्याणिकपर्वके व्रतनियममें छोडदेना चाहिये. यह एक सिधी सडकहै.

२०—कल्पसूत्रमें जो पचासमे रौज संवत्सरी करना कहा. और समवायांगसूत्रमें जो सीतेरदिन चौमासेकी पूर्णाहूतिमें बाकी रखना कहा. यहबात वार्षिक पर्वके व्रतनियमकी अपेक्षा अधिकमाहिना गिनतीमें न लेवेतो दोंनोंतर्फसे कायम रहसकतीहें, और इसीबातपर तपगछवाले कायमहै. आपलोग संवत्सरीके पेस्तर पचास रौजकी बातपर कायम रहतेहो, मगर बाद संवत्सरीके सीतेररौज रखनेकी बातपर कायम नही रहते, देखलो! इसी चौमासेमें आपकी संवत्सरीकेबाद (१००) रौज बाकी रहगयेथे, अगर कहा जाय निशीथचूर्णि दशवैकालिकनिर्युक्तिकी वृहद्वृत्तिके पाठमें अधिक माहिना गिनतीमें लियाहै तो जवाबमें मालुमहो फिर आपलोग दो आषाड आवे जब पहले आषाडकों चौमासिककृत्यमे गिनतीमें क्यौं नही लेते? दरअसल! अभिवर्द्धित संवत्सर तेरहमहिनोंका होताहै इसअपेक्षा आपलोग कहतेहो गिनतीमें लिया. मगर चातुर्मासिक वार्षिक और कल्याणिकपर्वके व्रतनियमकी अपेक्षा गिनतीमें लेना एसा कहां लिखाहै? इसका जवाब दिजिये! बस! इतनीही बातसमजनेकीहै. अगर इसी बातको अछीतरह समज लिइजाय तो कोइशकका काम न रहेगा.

२१ इनदिनोमें एक हेंडबील छपाहुवा यहां पुनेमें मुजकों मीला. जोकि बंबइसे बजरीये डाकके मेरे नाम आयाथा. इसमे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सवालकर्त्तानें सात सवाल पुछेथे. उसका जवाब देताहुं. सुनिये! सवालकर्ता जोकुछ सवाल पुछे उसका माकुल जवाब देना उत्तरदाताका फर्जहै. अपनेपर या अपनी समुदायपर कोइदुसराशख्श सवाल पुछे और उसका जवाब न देना एक-तरहकी कमजोरीहै. खरतरगछ या अंचलगछके कोइ महा-शय तपगछके मंतव्यपर सवाल पुछे. और तपगछके जैना-चार्य जैनउपाध्याय गणी वगेरा पदवीधर जवाब न देवे बडेताज्जुबकीबातहै. अगर कहाजाय जवाब देनेका ज्ञान न हो तो क्या करना? जवाबमें मालुम हो फिर पदवीधर क्यौं बनना? अगर पदवीधर बनना तो जवाब देना फर्जहै. जैना-चार्य किसको कहना और जैनाचार्यपदवी किसके हाथसे लेना. यहभी एक शास्त्रीय सवाल है. असलमें जैनाचार्य पदवी अपने गुरुके हाथसे लेना चाहिये मुताबिक जैन शास्त्रके पंचमहाव्रतपालन करना और आचार्य पदके छत्तीसगुण हासिल करना जब जैनाचार्य होसकतेहै. ऐसे पढेगुने जैनाचार्य जैन धर्मकों तरक्की देसकतेहै.

२२—अकेला तपकरके योगवहन करलिया और ज्ञानपढे नही तो क्याहुवा? श्रावकको जिस जिस सामायिक प्रतिक्रमणके वि-भागका उपधान वहनकरायाजाय उसका अर्थ और मूलपाठ कंठाग्र कराना चाहिये. जबतक मूलपाठ और अर्थ कंठाग्र न हो तबतक तपभी चालु रखना, कोरे उपवास एकाशने कर-लिये और उपधान पूर्ण होयगे एसा समजना ठीक नही. जैन धर्मके गुरुओमे अग्रेश्वरी होकर धर्मकेबारेमे सवाल कर्ताके सवालोके जवाबनही दिये तो फिर किस बातके अगे-श्वरी हुवे?

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२३—आजकल जो अधिक महिनेकी चर्चा चलरहीहै उसी-पर कायम रहकर लेख लिखना और किसीपर अंगतटीका नही करना यह इन्साफकी बातहै. अगर कोइ एसा लिखेकि अमुक जैनमुनि ठीक नही, अमुक जैनमुनि आचार पाल-नेमे शिथिल है. इन्साफ कहताहै चर्चाके काममे एसी अंग-तटीका क्यौंलाना? सवालकर्त्तानें जो जो सवाल पुछेहो उनका माकुल जवाब देना इन्साफकी बात है. अगर कहा-जाय सभा होगी उसवख्त जवाब देयगे तो यह एक तर-हकी कमजोरीहै. जवाब देनेमें देरी क्यौं करना? तुर्त जवाब-देकर फिर दुसरी बात करना. जिससे सवालकर्त्ता एसा न कहसके मेरे सवालका जवाब नही मिला, और बाचनेवालो-कोभी फायदा पहुचे.

२४—अगरकोइ जैनमुनि दुसरे जैनमुनिकों एसा कहेकि आपलोग क्रियामें शिथिल आचारवालेहै तो जवाबमें मालुमहो. उत्सर्ग मार्गपर चलनेवालोको अपवाद मार्गका (यानी) शिथिल मार्गका सहारा क्यौं लेना चाहिये, जैन शास्त्रोमें उत्सर्गमार्गको कठिन मार्ग कहा. और अपवादमार्गको शि-थिलमार्ग कहा. उत्सर्गमार्गमें जैनमुनिको विहार वगेरा कार्यमे सहायता नही लेना चाहिये. अगर कोइ जैनमुनि या जैन साधवीके विहारकेवख्त श्रावक श्राविका नोकर चाकर साथ चले उन नोकरचाकरोके लिये बेंलगाडीसाथ रहे. जैन मुनि या जैन साधवी जानतेहोवे कि ये लोग हमारे विहारके सबब साथ चलेहै. और एसीसहायता लेवेतो इस बातको उत्सर्गमार्गमे समजना या किसमे? अगर कहाजाय द्रव्य-क्षेत्र कालभाव देखकर ऐसी सहायता लेनी पडतीहै तो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

फिर सोचिये! विहारमें सहायता लेना पडा या नही?

२५—जैन शास्त्रोमें जैन मुनिको और जैन साधवीको नव-कल्पी विहार करना कहा. (यानी) एक गांवमें एक महिनेसे ज्यादा ठहरना नही कहा. चौमासेके दिनोमें चार महिना बेशक! ठहरना कहा, अगर कोइ जैन मुनि या जैन साधवी विद्या पढनेके लिये किसी गांव नगरमे या किसी जैन पाठशालामे दो दो चारचार वर्षतक ठहरे तो यहबात मुताबिक जैन शास्त्रके उत्सर्ग मार्गमें समजना या किसमे? तीर्थंकर गणधरोका साफ फरमानहै कि विद्याभी पढते रहना और विहारभी करते रहना, विद्या पढनेके लिये चारित्रमे शिथिलता क्यौं करना, जैनागम उत्तराध्ययनसूत्रमें बयान है कि हरेक जैन मुनिको या जैन साधवीकों दिवसके तिसरे प्रहरमें भिक्षाको जाना, अगर कोइ जैन मुनि या जैनसाधवी सवेरे सात बजे चाह दुध वगेरा खानपानके लिये भिक्षाको जावे तो यह बात उत्सर्ग मार्गमें समजना या किसमें? जैनमुनिको दिनमें एक दफे आहार करना कहा है.

२६—जैनशास्त्र उत्तराध्ययनमें लिखाहै, जैनमुनिकों या जैनसाधवीको धूप ठंड वगेरा पारिसह सहन करना. अगर कोई जैनमुनि—या जैनसाधवी विहारकेवख्त रास्तेमेकंतानके मोजे पहनेतो यहबात उत्सर्ग मार्गमें समजना या किसमे? चाहेकोई जैन मुनि जैनसाधवी श्रावक या श्राविका कोइहो उपवास व्रत करे तो पहले रोज एकासना करे, और पारनेकेरोजभी एकासना करे. अगर कोइ एसा बरताव न करे तो इस बातको उत्सर्ग मार्गमे समजना या किसमे? जैनमुनिको दिनमें नींद लेना नही कहा.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

२७—जैन मुनिको या जैन साधवीको अगर विद्या पढना तो मुनासिवहै गीतार्थ जैन मुनिके पासजाकर विनय भक्तिसे विद्या पढे,मुल्क गुजरात काठियावाडमें जहां जैनश्वेतांबर श्रावकोकी आबादी ज्यादहहै. वहां जैन मुनिको या जैनसाधवीको विहार करना मुश्किलकी बात नही. अहमदाबादसे पालितानेतक विहार करना, सुरत बडोदेतक विचरना, या महीकांठेमे विहार करना मुश्किलकी बात नही. मगर तमाम हिंदुस्तानमे जहांकि जैनश्वेतांबर श्रावकोकी आबादी दुरदुर परहै. मुल्क मारवाड, मेंवाड, सिंध, पंजाब, राजपुताना, बंगाल, मध्यप्रदेश, वराड, खानदेश, महाराष्ट्र, कोकन, कर्नाटक, मद्रास और दखनहैदराबाद वगेरा तर्फ विना सहायतालिये विहार करना और जैनधर्मको तरक्की देना, फायदेमंदहै.

२८—हरेक शख्शकों अपने वरतावपर खयालकरना चाहिये. जमाने हालमें जैसा द्रव्यक्षेत्रकालभाव मौजूदहै. वैसा धर्मसाधन होसकताहै. दुसरोका वाद लेना ठीक नही. तीर्थंकर गणधरोंका फरमाना क्याहै? उसपर खयालकरना चाहिये. अगर कहाजाय द्रव्यक्षेत्रकालभाव देखकर सहायता लेनी पडती है. तो फिर—द्रव्यक्षेत्रकालभावपर चलिये. इस लेखका मतलब यह हौकि—उत्सर्गमार्गपर चलना आजकल बनसकता नही, आजकल अपवादमार्गका सहारा—सबको-लेना पडताहै.

२९—अगर कोई जैनश्वेतांबर श्रावक एसा कहेकि—आज कलके जैनमुनि क्रियामें शिथिल होगये है. तो जवाबमें मालुम हो. कहनेवाले खुद दीक्षा इख्तियारकरके क्रियामें उत्सर्ग-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मार्गपर चले, और कठिन आचार पालकर बतलावे. तीर्थंकर–और चक्रवर्तीयोने संसार छोडकर दीक्षा लिइहै. श्रद्धारहित–केशरका तिलक करनेसे श्रावक होगये एसा समजना गलतहै. जैनशास्त्र फरमातेहै. श्रावकधर्मके (२१) गुण और (१२) व्रत इख्तियार करना चाहिये.—

[दोहा.]

चौदह चुके बारह भुले–छकायाके न जाने नाम,
नगर ढंढोरा फेरिया–श्रावक महारा नाम, १
माला फेरत हाथमें–जिभाहिलत मुखमांहि,
मनुवा फिरत बजारमें–एभी समरन नांहि, २

श्रावकको रात्री भोजन नही करना चाहिये. व्यापारमेभी असत्य बोलना नही सदाचारसे चलना, जमींकंद नही खाना, धर्मखातेकि बोली हुइ रकम तुर्त धर्मकाममे खर्च देना, अपने चोपडेमे जमा कररखना ठीक नही. धर्मका गुनाहहै. व्याजके लोभसे असली रकमभी रहजातीहै. हरसाल ऐक जैन तीर्थकी जियारत करना, ताबेउमर नवलाख नमस्कारमंत्र पढना, चौदहनियम हमेशा धारण करना. बडे बडे पापारंभ छोडना जिस जैन मंदिर या जैनतीर्थके देवद्रव्यका हिसाब अपने हस्तगतहो. वो देवद्रव्य जिन मंदिरके खजानेमे रखना, और मुनिम गुमास्ते रखकर कामचलाना, मगर अपने घरमे देवद्रव्य नही रखना. हरसाल देवद्रव्यका हिसाब छपवाकर जाहिर करना और उसपर चतुर्विध जैनसंघकी सलाहसे पांच श्रावक कार्यकर्त्तातरीके मुकरर करना. चाहे गुजराती, मारवाडी, पंजाबी, दक्षिणी, काठियावाडी या कछी कोइ श्रावकहो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

देवद्रव्यपर सबका समान हकहै. कोइ श्रावक किसी दुसरे श्रावकको एसा नही कहसकताकि आपका इसमे हक नही. इतना लिखनेका मतलब यह हुवा कि हरेक जैन मुनि जैन साधवी श्रावक या श्राविकाको मुताबिक जैनशास्त्रके फरमान-पर अमल करना चाहिये. अछा! अब सवालकर्ताने जो सात सवाल पुछे है उनका माकुल जवाब देताहुं सुनिये.

३०—सवालकर्ता अपने सवालोकी शुरुआतमे लिखतेहै. न्यायरत्नजी और पं० आनंदसागरजीको सूचना.

(जवाब.) कहिये! आपकी क्या! सूचना है? न्याय-रत्नके पास माकुल जवाबोंकी कमी नहीहै.

आगे सवालकर्ता इस मजमूनको पेंशकरतेहै. वर्त्तमानमें लौकिक टिप्पनके आधारसे पहले भादवेमें पर्यूषण करना.—या दुसरेमें? यह चर्चा चलरही है.—

(जवाब.) चलरही है तो चलने दो. मगर यह बतलाइये! जैन पंचांगकी रुहसे इसवर्समें दो भाद्रपद माहिने नहीथे. लौकिक पंचांगकी रुहसे दो भादवे थे. बातकरना जैनशास्त्र कल्पसू-त्रकी और चलना लौकिक पंचांगपर इसकी क्या! वजहहै? खरतरगछ, अंचलगछ और लोंकागछवाले जैनशास्त्र कल्प-सूत्रके (५०) दिनकी बातको आगे लातेहै तो फिर लौकिक पंचांगपर क्यौं चलतेहै?

फिर सवालकर्ता—तेहरीर करतेहै. अधिकमासके विषयमेही कायम रहना युक्तियुक्त है.

(जवाब.) में इसी बातपर कायमहुं, और इसी लिये यह

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अधिकमास निर्णय किताब छपवाकर जाहिर किइगइहै, आपलोग ब–गौर देखिये! और सत्यका इम्तिहान किजिये!

३१–सवाल पहला, दो भादवे होनेपर आषाड चौमासीसे पचास दिन कब पुरे होतेहै. और वार्षिक पर्व (५०) में दिन या (४९) में दिन करना चाहिये, मगर (५१) में दिनकरनेवालोंको क्या! प्रायःछित आवे?

(जवाब) जैनागम समवायांगसूत्रके प्रमाणसे (७०) दिन संवत्सरीके बाद बाकी रखना कहा, मगर (१००) दिन बाकी रखनेंवालोंको क्या! प्रायःछित आवे? इस बातको आपलोग सौचलिजिये. अब आपके पचास दिन उनंचास दिनका जवाब सुनिये! आषाड चौमासेकी चतुर्दशीसे भाद्रपद सुदी चतुर्थीतक अगर कोइ तीथि बढजातीहै तो जैसे वो गिनतीमें नही लेते. इसीतरह अधिक माहिनाभी वार्षिक पर्वकी अपेक्षा गिनतीमें नही लिया जाता. यह एक सिद्धि सडक है, जब दो आषाड आतेहै तब खरतरगछवालेभी पहले आषाडको चौमासानही बेठाते, दुसरे आषाडमें बेठातेहै. और पहले आषाडको चौमासी कर्तव्यमें छोड देतेहै. फिर दोनों मान्य कहांरहे?

३२–सवाल दुसरा, आप या आपके अनुयायी अधिकमाससंबंधी जैनशास्त्र मुजिब चलतेहै, या अन्य? और जहां जहां जैनशास्त्रोमें आधिकमासका वर्णन आयाहै, वह स्वमतानुयायीहै. या अन्य? इसका खुलासा किजिये.

(जवाब.) इसीका खुलासा करताहुं, सुनिये! जैनशास्त्रोमें जहां जहां अधिक माहिनेका वर्नन आताहै. वहां इत-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

नाही वर्नन लिखाहै कि अभिवर्द्धित संवत्सर तेरहमाहिनोका होताहै. इसके शिवाय दुसरी बात नही आती. खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अधिकमहिना चातुर्मासिक वार्षिक और कल्याणिक पर्वके व्रत नियममें गिनतीमें लियाहै, एसा पाठ आजतक क्यौं नही बतलासके? और जब दो आषाड आतेहै. जब खरतरगछ अंचलगछवाले पहले आषाडको चातुर्मासिक पर्व कृत्यमें क्यौं छोडदेतेहै? दो पौष आतेहै तब तीर्थंकर पार्श्वनाथका जन्मकल्याणिक एक पौषमे करतेहै, और एक पौषको कल्याणिक पर्वके व्रतनियमकी अपेक्षा क्यौं छोडदेतेहै? इसका जवाब क्यौं नही देते. लौकिक पंचांगकी अपेक्षा जब दो आसोज आवे तब सिद्ध चक्रका तप दो दफे क्यौं नही करते? इससाल दो भादवे लौकिकपंचांगकी रुहसे माने और संवत्सरीकेबाद (७०) दिन हुवे बाद चौमासा खतम करके विहार क्यौं नही किया? पर्यूषणपर्व निर्णय किताबमें मेने पुछाथाकि अगर अधिकमहिना गिनतीमें लेनेका कहतेहो तो पहले आषाडको चौमासी पर्वकी अपेक्षा गिनतीमें क्यौं नही लेते? इसका जवाब आजतक नही दिया, इसकी क्या वजहै?

हम और हमारे अनुयायी तपगछवाले अधिक महिनेके बारेमें मुताबिक जैन शास्त्रके फरमानपरही चलतेहै. और अधिक महिनेके वर्तनकों स्वमतानुयायी मानतेहै. मगर खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजीकीतरह एसा नही मानते, आधेक महिना गिनतीमें लिया है एसा कहतेभी जाना. और चातुर्मासिक पर्व वगेराके व्रतनियमकी अपेक्षा पहले आषाडको गिनतीमेसे छोडतेभी जाना, जैनशास्त्र फरमातेहै कि—

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अधिक महिना कालचूला यानी कालपुरुषकी चोटीसमान है, आदमीके शरीरका माप कियाजाताहै. तब चोटीका माप नही किया जाता, इसीतरह अधिक महिना पर्वकृत्यमें नही गिना जाता. शिवाय इसके ज्यादा खुलासा और कोइ क्या देगा ?

३३—सवाल तीसरा. आपलोग अधिकमासकों कालचूला कहतेहो परंच उसको वार्षिक कृत्योमें नही लेना एसा मूलपाठ दिखला सकतेहो ?

(जवाब.) हां दिखला सकताहुं, मगर शर्तयहहै कि पूर्वपक्षमें पाठ जाहिर हुवाहो तो उत्तर पक्षमें पाठ जाहिर करना सवालकर्ता पहले अपने सवालकी पुख्तगीका पाठ जाहिर करे, फिर मुजसेभी पाठ लेवे. एसा होनेसे बाचनेवालोकोंभी ज्ञान हासिल होगा, खरतरगछ अंचलगछवाले पहले आषाडको चातुर्मासिक पर्वकी अपेक्षा गिनतीमें नही लेते, कल्याणिक पर्वकी अपेक्षा एक पौषको गिनतीमें नही लेते यह किस जैनशास्त्रके मूलपाठमें लिखाहै ? जाहिर किजिये फिर मेरी तर्फसेभी मूलपाठ जाहिर होगा.

३४—आगे सवालकर्ता. बयान करतेहै. जैनशास्त्रमुजब पौष आषाडको कालचूला कही है. या लौकिक श्रावण भादवादिकको ?

(जवाब.) इससाल खरतरमछ अंचलगछवालोंने दो भाद्रपद माहिने माने. यह लौकिकपंचांगकी अपेक्षा माने. यहभी एक सवाल है. मुताबिक जैनशास्त्रके पौष आषाडको कालचूला मानना चाहिये. गअली सालमें दो आषाड जैनपंचांगकी रुहसे आनेवाले है, देखलेना.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

खरतरगछ और अंचलगछवाले उसवख्त पहले आषाडको चातुर्मासिक कृत्यकी अपेक्षा छोडदेते है. या गिनतीमें लेतेहै? गिनतीमें लेनेकी बाततो जभी साबीत होगी अगर पहले आषाडमें चौमासा बेठावे, मगर बेठाते है, दुसरे आषाडमे और करतेहै दोनो आषाड मान्यहै. क्या खूब बातहै?

३५–फिर सवालकर्ता. इसी सवालमें तेहरीर करतेहै. चूला तो अंतभागमें शिखररूप होतीहै. इस हिसाबसे दुसरे महिनेको कालचूला कहां जावे, मगर आप पहले महिनेको चूला किसशास्त्र प्रमाणसे कहते हो. इसकाभी खुलासा पाठ बतला सकते हो?

(जवाब.) हां! बतलाता सकताहुं. सुनिये! कालचूला पहले महिनेको इसलिये मानी गइहै कि–जो अधिकमाहिना है वो गतमासकेसाथ संबंध रखताहै. इस बातको आप ज्योतिषशास्त्रसे या अछेअछे ज्योतिषी पंडितसें तलाश किजिये! जब दो भादवे महिने आवे तब पहला भादवा–श्रावणमासकी कालचूला बने. इसी लिये अन्यमजहबवाले पहले भाद्रपदमें श्राद्ध नही करते. जब दो आषाड आवे तब पहला आषाड ज्येष्ट महिनेकी कालचूला बने. इसी लिये उसमें चातुर्मासिकपर्व नही माना जाता. अन्यमतके पंचांगके आधारसे जिसमासमें संक्रांतिका उदय न हो उसको अधिकमास कहतेहै. और वो संक्रांतिका उदय गतमासमें होताहै. इस लिये पहले अधिकमासको कालचूला कही गइ, अगर दुसरे अधिकमासको कालचूला माने तो सवाल पैदा होगा कि–जब दो श्रावण आयगे तब आपके ख्यालसे दुसरा श्रावण

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कालचूला बनेगा. चौमासीसे पचासरोजकी गिनतीमें दुसरे श्रावणमें पर्यूषणपर्व आयगे, इस लिये पहला अधिकमहिना कालचूला मानना प्रमाणसिद्ध है.

३६–सवाल चोथा, मेरुके कितने हिस्सेको जैनशास्त्रोमें क्षेत्रचूला कहीहै? वैसेही उर्द्धलोकमेंभी चूला मानी गइ है. उनसब जगह मनुष्यचोटीका दृष्टांत घटा सकते हो?

(जवाब.) हां! घटा सकताहुं. मेरुपर्वत लाख योजनका कहा, उसपर जो (४०) योजनकी क्षेत्रचूला कही है. वो लाख योजनमें नही गिनीजाती. इसीतरह मनुष्यचोटीभी मनुष्यके मापमें नही गिनीजाती, और वैसे अधिकमहिनाभी नही गिनाजाता, देखिये! मनुष्यचोटीका दृष्टांत घटगया–या नही? उर्द्धलोकमें जो क्षेत्रचूला मानी गइहै–वोभी उनउन-जगहकी गिनतीसे बहारहै, एसा जानना.

३७–सवाल पांचमा, जैन ज्योतिषमुजब अधिकमासका कितना प्रमाण? और अभिवर्द्धित माहिनेका क्या स्वरूप? और कितना प्रमाण? बतला सकतेहो? यहां जबानी जमा-खर्च नही चलेगा, गणित दिखलाना होगा.—

(जवाब.) गणितकरके दिखलाताहुं. सुनिये! मेरे यहां जबानी जमाखर्च नहीहै. मुताबिक जैन ज्योतिषके अधिक मासका प्रमाण इसतरहहै, खयाल किजिये! एक चांद्रमास और ओगणत्रीस दिनपर बासठीये बत्तीस भाग इतना अधिकमासका प्रमाणहै. अब अभिवर्धित माहिनेका स्वरूप सुनिये! एकतीस दिनकेउपर एकसोचोवीस भागात्मक एक-सोएकीस भागका अभिवर्द्धित महिना होताहै. इस अपेक्षा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बारांही महिनोमें एकादिन और एकसोएकीस भाग मिलाते जाओ. इसतरह बारां महिनेमें जो कुछ भाग बढता रहे, उस सबको मिलानेसे एक अभिवर्द्धित संवत्सर होगा, तीनसो-त्र्यासी दिन और एकसो चोविसये चौमालीस भागका एक अभिवर्द्धित संवत्सर हुवा. देखिये! गाणित करके दिखला दियाहै. जादा खुलासा इसका ज्योतिषकरंडक और लोक-प्रकाश ग्रंथमें मौजूदहै. लोकप्रकाश ग्रंथका सबुतदेताहुं. गौर किजिये.

एकोनत्रिंशदित्येवं दिनान्यंशारदैर्मिताः
मासोधिकोयंस्यात्रिंशत् सूर्यमासव्यतिक्रमे.

(माइना.) तीससूर्यमास बतीत होनेसे एक चांद्रमास बढताहै. सूर्यमास और चांद्रमासके अंतरसे एक अधिकमास होताहै. और जिसवर्समें वो आवे उसवर्सको आभिवर्द्धित संव-त्सर कहा जाता है.

३८—सवाल छठा, जैनागमोमे जीवाजीवादिनवतत्व षड-द्रव्य (१४) राजलोक वगेराका स्वरुपकी तरह (१३) महिनोका अभिवर्द्धित संवत्सरकाभी स्वरुप बतलाया है. उसको नही माननेवालोको क्या कहना चाहिये?

(जवाब.) खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी अपने विज्ञापन नंबर दुसरेमे लिखतेहै, दो आषाड होवे तब दोनों मान्य मगर चौमासी दुसरे आषाडमें करना. इसपर सवाल पैदा होताहैकि जब चौमासा दुसरे आषाडमे बेठाना मंजुर हुवा तो चातुर्मासिक पर्वकृत्यमें पहला आषाड क्यौं छोडा? और फिर दोनों आषाड मान्य कहां हुवे? मान्य तो जब होते अगर पहले आषाडमें चौमासा बेठाना मंजुर होता,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दोनों आषाड मान्यभी कहना और चातुर्मासिक पर्वकृत्यमें पहला आषाड छोडतेभी जाना इसका क्या सबबहै? दो पौष आवे तब तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवानका जन्मकल्याणिक एक पौषमें करना और एक पौषको छोडना. इसकाभी क्या सबब?

अभिवर्द्धित संवत्सर तेरह महिनोका होताहै. इस बातको सब लोग जानतेहै, इसालिये जगजाहिर बात है. मगर चातुर्मासिक वार्षिक कल्याणिक वगेरा पर्वकृत्यमें गिनतीमे नही लेना यह जो मुद्देकी बात है. इसको खयालमें क्यौं नही लाते? अगर इसी बातकों अछीतरह समजालिइजाय तो कोइ शक पैदा होनेका सबब न रहे.

३९—सवाल सातमा. सब विवादकों छोडकर अभी जैनपंचांग शुरु करनेमें क्या बाधा आतीहै?

(जवाब.) मुजे तो कुछभी बाधा नही आती, आपलोग आपना सौच लिजिये. में जिनेंद्रोके फरमानपर चलनेके लिये अपने दिलसे मंजुरहुं. मगर तमाम जैनश्वेतांबरसंघ मंजुर करे—न करे—इस बातका कंट्राक्ट में नही लेसकता, सब मनुष्योका स्वभाव एकसमान नही होता. धर्म और प्रीत जोराजोरी नही होसकती, उपदेश देना अपना फर्जहै, मानना न मानना उनके दिलकी बात है, तीर्थंकरदेवभी धर्मका उपदेश देतेथे, मगर माननेवाले मानतेथे, नही माननेवाले नही मानतेथे. में जैननजुम और धर्मकी तरक्की होनेमें सहमतहुं. मेने जैन शास्त्रोके सबुतसे कइवर्स होगये, जैन संस्कारविधि किताब बनाइथी और छपकर जाहिर हुइथी. जन्मसंस्कार, विवाहसंस्कार वगेरा सोलह संस्कार किसविधिसे करना जैन शास्त्रोके आधारसे

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बतलायेथे, जो जो जैनश्वेतांबर श्रावक जैनधर्ममें ज्यादा पावंदथे उनोने मंजुर किया. कइ श्रावकोने नहीभी मंजुर किया, इसका कोइ क्या करे.

४०—में यह अधिकमासनिर्णय किताब आम जैनश्वेतांबर-संघके सामने रखताहुं. इसको पढिये. अपने दोस्तोकों पढनेकी हिदायत किजिये, जो चर्चा अधिक महिनेके बारेमे आजकल चलरहीहै इस किताबमे तमाम दलिले दर्ज है, अवलसे अखीरतक देखिये! इस किताबको पढनेसे आप लोग खुद माकुल जवाब देसकेगे, और अपने दिलमे तसल्ली होजायगी कि अधिक महिना चातुर्मासिक, वार्षिक और कल्याणिक वगेरा पर्वकृत्यमें गिनना नही.

४१—अधिकमासकी चर्चाके लिये दोंनों तर्फसे प्रतिज्ञापत्र छपकर जाहिर होचुकेहै. शास्त्रार्थ करके निर्णय करलो, शास्त्रार्थमें जो जो दलिले पैदा होगी वे बहुतकरके इस किताबमें आचुकीहै, चर्चाके लिये पुस्तकों के बारेमे कोइ एसा कहेकि हमको पुस्तक नही मिलसकते तो जवाबमें मालुमहो. इसमें कोइ क्या करे, अपने मंतव्यकी पुख्तगीकेलिये जो जो पुस्तक चाहिये अपनी तर्फसे चाहेवहांसे मंगवाकर तयार रखना मुनासिबहै. और चर्चामें जो कुछ निर्णय आवे उसको मंजुर रखना लाजिम है, दुनियामे सारबस्तु धर्म है.

४२—में. वादविवादके सवालोका जवाब बजरीये चीठीके देना पसंद नही करता, जिसको जो कुछ पुछनाहो. बजरीये छापेके पुछे, याते बाचनेवालोकोभी फायदा पहूंचे. इतना जरुर यादरहे! गछोके जो भेद पडगयेहै. यह एक न होगे,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जमानें तीर्थंकरोकेभी धर्मके बारेमे ऐक्यता नही होसकीथी तो आज कैसे होगी? बेशक! धर्मशास्त्रोके फरमानमर कामील एतकात रखना अछाहै. आजकल रुढीका प्रचार ज्यादा दिखाइ देरहाहै. मगर हरेक शख्शको धर्मश्रद्धामें पावंद बनेरहना फर्जहै.

४३—शास्त्रार्थ करना और सत्यको मंजुर रखना बेशक! अछाहै. इन्साफके सामने जिसतत्वने शकिस्त नही खाइ वो तत्व सचाहै, एसा जानना. इन्साफकी बुद्धि पाना बडे पुन्यके ताल्लुकहै इन्साफसे बोलना या लिखना और सभाके नियमा नुसार शास्त्रार्थ करना कोइ हर्जकी बात नही, सच बोलना निस्पृह रहना और पूर्वसंचितकर्मपरभरुसा रखना. यह बात हमेशां केलिये अछीहै.

४४—मेने इसचालुचर्चाके संबंधमें बहुतकुछ लिखाण कररखाहै, उसको छपवाकर पुस्तकाकार जाहिर करना फायदेमंद होगा शास्त्रार्थ करनेसे फायदा नही एसा कहना गलतहै. सत्यका बयान करना हमेशां अछाहै. कोई शख्श अपने मंतव्यपर आक्षेप करे और उसके जवाब देनेमे चूप रहना ठीक नही. सचकी हमेशां फतेहहै.

मुकाम—पुना,
मुल्क दखन.

ब कल्म—जैनश्वेतांतर धर्मोपदेष्टा—
विद्यासागर—न्यायरत्न—महाराज
—शांतिविजयजी—

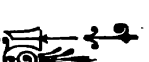

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जाहिरखबर.

[खरतरगछसमीक्षाग्रंथ.]

मजकुर ग्रंथ मेरी तर्फसे बनरहाहै, इसमे छह कल्याणिकके लिये माकुल जवाब दर्जहै, जैनशास्त्रोमें हरेक तीर्थंकरोंके पांच कल्याणिक होते है, नवांगसूत्रवृत्तिकार श्रीमान् अभयदेवसूरिजीनें पंचाशकसूत्रकी टीकामें तीर्थंकर महावीरस्वामीके पांचकल्याणिक फरमाये है. जिससाल अधिकमाहिना आवे तो उसको चातुर्मासिक, वार्षिक और कल्याणिकपर्वकी अपेक्षा गिनतीमें नही लेना. यह बात जैनशास्त्रके पाठसे साबीत करदिइहै. सामायिक लेतेवख्त इर्यापथिका पाठ पहिले और करेमिभंतेका पाठ पीछे बोलना, मुताबिक जैनशास्त्रोंकें फरमानसे सिद्ध करदियाहै, जैनमुनिकों व्याख्यानके वख्त या तमामदिन मुखपर मुखवस्त्रिका बांधना किसी जैनशास्त्रमें नही लिखा. इस बातकोभी इसमें तेहरीर किइहै. दादाजीकेसामने नैवेद्य चढाया हूवा, गुरुद्रव्य होगया. और गुरुद्रव्य नही खाना चाहिये, इसकाभी खुलासा इसमें दियाहै.

खरतरगछके श्रीजिनप्रभसूरिजीने अपने बनायेहुवे ग्रंथमे तपगछके बारेमे जो कुछ लिखाहै, उसका जवाब इसमें दर्ज कियाहै, किताब रत्नसागर मोहनगुणमालामें खरतरगछके उपाध्याय श्रीमोहनलालजीने जो तपगछ खरतरगछके बारेमें लिखाण कियाहै उसका जवाबभी इसमें सामीलहै, किताब स्याद्वादनुभवरत्नाकरमे खरतगछके मुनि श्रीयुत चिदानंदजीने गछादिव्यवस्था निर्णयमें जो कुछ लिखाहै, उसका

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जवाबभी इसमे रोशनहै, किताब महाजन वंशमुक्तावलीमें ग्रंथकर्ताने जो कुछ मजमून गछके संबंधमें पेंशकियाहै, उसका जवाबभी इसमे तेहरीरहै, किताब प्रश्नोत्तर मंजरीमें और प्रश्नोत्तर विचारमें खरतरगछके पंन्यास श्रीकेशरमुनिजी गणीने तपगछखरतरगछके बारेमें जो कुछ लेख लिखा है उसका जवाबभी इसमें मौजूदहै. जिसको पढकर जिज्ञासु लोग खुश होंगे, इतना लेख हाल तयारहै, खरतरगछके मुनि श्रीयुतमणिसागरजीका बनायाहुवा, बृहत्पर्यूषणनिर्णयग्रंथ जब मुजकों मीलेगा, उसको देखकर उसका जवाबभी इसमें जोड दियाजायगा, इस किताबमें कोइ अपशब्द नही लिखाहै. जैनशास्त्रोके पाठ और दाखले दलिलोसे जवाव लिखागयाहै. जो कोइ जैन श्वेतांबरश्रावक इसग्रंथको अपनेखर्चेसें छपवाना चाहेतो उनका नाम प्रकाशक तरीके लिखा जायगा अगर कोइकहे ग्रंथका मेटर हमको भेजो देखकर लिखेगे. तो जवाबमें मालुम हो मेटर किसीको भेजा नही जायगा. जिसकी मरजी हो रुबरु आनकर देखजावे. और खर्चा पेंशकरे. उनका नाम प्रकाशकतरीके लिखा जायगा.

बकल्म—जैनश्वेतांवर धर्मोपदेष्टा
विद्यासागर न्यायरत्न मुनिशांतिविजयजी
(मुकाम पुना. मुल्क दखन.)

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

[तालीम धर्मशास्त्र]

१—जगत् और इश्वरअनादि है, अगर इश्वरने जगत्-बनाया मानेतो इश्वरको किसनेबनाया, यहभी सवाल-पैदा होगा,

२—कर्मअकेले फलदेते है, उद्यमअकेला फलनही देता, उद्यम वृथाजाताहै, कर्मवृथा नहीजाते, इसलिये कर्मबलवानहै,

३—पूर्वकृत भलेबुरेकर्मोंका फलजीव यहां भोगताहै और यहांकरेगा वैसाआगेको पायगा,

४—मिथ्यात्वके उदयसे चौदहपूर्वके पाठी और यथा-ख्यातचारित्रके पालनेवालेभी संसासमुद्रमें डुबजातेहै, सबुतहुवा श्रद्धा बडीचीजहै.

५—जिसशख्शको जातविरादरीके गुनाहसे जांतब-हार कियाहो, वो जिनमंदिरमें और व्याख्यान धर्मशा-स्त्रकी सभामें आसकताहै, जिसने देवगुरुधर्मका गुनाह कियाहो, और उसको जैनसंघके बहारकरदियाहो, वो नही आसकता,

६—चांद सूर्यवगेरा ग्रहकिसीका भला बुरानही करते, शुभाशुभके सूचकहै, कारकनही,

७—अपनी सालियाना आमदनीमेसे आधा चौथा आठमा या सोलहमाहिस्सा धर्मकाममें खर्च करनाचाहिये,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

८—मनविनाभी कइलोग देखादेखी धर्मक्रियाकरते है, मगर अैसीक्रियासे आत्माको कोइफायदा नही, विनापुन्यानुबंधिपुन्यके मनकेइरादे कभीसुधरतेनही,

९—हरेकजैनगृहस्थकों जन्मादिसोलह संस्कार जैनविधिसे करनाचाहिये,

१०—जिनेंद्रोके वचनकों खललपहुचाकर लौकिक व्यवहारकों मददकरे वो शख्स धर्मसेदुरहै,

११—हरेकजैनगृहस्थकों मुनासिबहै, अपने घरमें देवद्रव्य वगेरा धर्मद्रव्य न रखे किसीजैनमंदिर या जैनतीर्थके देवद्रव्यकाहिसाब अपनेहस्तगतहो छपवाकरजाहिर करे, व्याजसेभी अपनेपास न रखे, व्याजके लोभसे असली रकमभीआना मुश्किलहोजातीहै,

१२—बडेबडे जैनतीर्थोमें या मंहिरमेंजहां देवद्रव्य ज्यादहहो, वो दुसरे जैनतीर्थमें या मंदिरमेंजहां मरम्मतहोनादरकारहो, लगादेनाचाहिये,

१३—स्नात्रपूजाकासामान अपनेघरसें हरहमेश नयालेजानाचाहिये, चढाइहुइचीजे नारियल बादामवगेरापैसेदेकरलेना, औरदोवारा चढाना ठीकनही.

१४—विनाश्रद्धा औरज्ञानके इस जीवकीमुक्ति नही होती, विना चारित्रके मुक्ति होसकती है, आवश्यकसूत्रमें लिखाहै, देखलो! और उत्तराध्ययनसूत्रमें लिखाहै, श्रद्धा परमदुर्लभ है.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com